viShNustuti from Maheshvara tantra

श्रीविष्णुस्तुतिः अथवा श्रीजगन्नाथस्तुतिः

Document Information

Text title : Vishnustuti from Maheshvaratantra

File name : viShNustutiHmAheshvaratantra.itx

Category : vishhnu

Location : doc_vishhnu

Transliterated by : Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

Proofread by : Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

Translated by : Sudhakar Malaviya

Description/comments : Maheshwara Tantra Jnanakhanda tRitIya paTalaM Verses 95-98

Latest update : May 27, 2019

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 17, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीविष्णुस्तुतिः अथवा श्रीजगन्नाथस्तुतिः

नमो मत्स्यकूर्मादिनानावतारैर्जगद्रक्षणायोद्यतायात्तिहर्त्रे ।
जगद्बन्धवे बन्धहर्त्रे च भर्त्रे जगद्विप्लवोपस्थितौ पालयित्रे ॥ १॥

हे भगवन् ! हे मत्स्य एवं कूर्म आदि नाना प्रकारके अवतारों को धारण करके जगत्की रक्षाके लिए उद्यत रहकर सभीके दुःखों का नाश करने वाले ! हे जगत्के बन्धु ! हे कर्म बन्धनोंके हर्ता ! हे भर्त्ता ! हे और दारुण कष्टोंके उपस्थित होने पर जगत् का पालन करने वाले ! आपको प्रणाम है ॥ १ ॥

यदा वेदपन्थास्त्वदीयः पुराणः प्रभज्येत पाखण्डचण्डोग्रवादैः ।
तदा देवदेवेश सत्त्वेन सत्त्वं वपुश्चारु निर्माय रक्षां विधत्से ॥ २॥

जब आपका पुरातन वैदिक [सनातन] धर्म उग्र पाखण्डियोंके द्वारा छिन्न-भिन्न कर दिया जाता है तब आप, हे देवदेवेश, सत्त्व गुण से सत्त्वमय सुन्दर शरीर धारण करके हम सबकी रक्षा करते हैं ॥

२ ॥

भूम्यम्बुतेजोनिलखात्मकं यत् ब्रह्माण्डमेतत्प्रविशन्निव त्वम् ।
चराचरं जीव इति प्रसिद्धिं गतोऽसि तस्मान्न भवत्परं यत् ॥ ३॥

भूमि, जल, अग्नि, वायु, और आकाश रूप जो ब्रह्माण्ड है वह सब तुम्हारेमें मानो प्रविष्ट है। वस्तुतः समस्त चराचर जगत् और जीवके रूपमें आप ही भासित होते हैं । इसलिए आपसे अलग कोई श्रेष्ठ तत्त्व नहीं है ॥

३ ॥

रक्षस्व नाथ लोकांस्त्वं तपसोग्रेण पद्मया।
दह्यमानान् गतानन्दान् रक्षितासीश्वरो यतः ॥ ४॥

अतः हे नाथ ! आप भगवती रमाके द्वारा किए गए उग्र तपस्या से जलने

वाले इन लोकोंकी रक्षा करें, क्योंकि आप ही इनकी रक्षा करनेमें समर्थ हैं ॥ ९८ ॥

इति श्रीनारदपञ्चरात्रे माहेश्वरतन्त्रे उत्तरखण्डे
देवगाणाप्रोक्ता श्रीविष्णुस्तुतिः समाप्ता ।

Verses 95-98 from Maheshvaratantra uttarakhanda tRRitIya paTalaM

Encoded and proofread by Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

---

viShNustuti from Maheshvara tantra

pdf was typeset on September 17, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*